IJAER/Sep-Oct 2016/Volume-5/Issue-5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Researc

सहिष्णुता की अहम् आवश्यकता

डॉ. कृष्णा गौड

व्याख्याता संस्कृत

राजकीय कला महाविद्यालय

सीकर (राजस्थान)

विधाता की इस रमणीक सृष्टि में मानव श्रेष्ठतम रचना है सृष्टि में श्रेष्ठता में योगदान है मानवीय मूल्यों का और भाव प्रवणता का। आज के इस भौतिकवादी युग में षायद मनुष्य कुछ कुछ भाव षून्यता की ओर बढ़ रहा है। क्योंकि जिधर देखें उधर त्वरा और आर्थिक हित मनुष्य पर अपना प्रभाव जमा लेना चाहते है। सभी अवस्था में मानवीय मूल्य संरक्षित रहे तथा सहिष्णुता का भाव बना रहे। तभी मानवता एवं संस्कार प्रतिपल बने रहेंगे।

भारतीय संस्कृति में वैदिक काल से ही एक दूसरे को साथ लेकर चलने की कामना की गई है। जैसा कि ऋगवेद कहता है :–

संगच्छध्वं संवदहवम् सं वो मनांसि जानताम्।

देवाभागं यथापूर्वं संजानानामुपासतो।

(ऋ. 10/199/2)

आगे चलकर रामायण व महाभारत में हम देखते है कि आदिकाव्य बाल्मिकी रामायण मानवीय समाज षास्त्र का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जो सहस्त्र षताब्दी पूर्व हमारे सामने आदर्ष मानव मूल्य प्रस्तुत करती है और दर्षाती है कि सहिष्णुता से किस प्रकार समस्याओं को परांगमुख किया जा सकता है। तदउपरान्त महाभारत मे युद्ध कथा के अतिरिक्त जो धर्म और नीति सम्बन्धी अनेक

आख्यान और उपाख्यान वर्णित है वे भारतीय जीवन के लिए अत्यन्त उपादेय है जैसा कि कहा गया है

धर्मे चार्थे व कामे च मोक्षे च भरतर्षम।

यदिहस्ति तदयन्त्र यन्नेहास्ति न तत्क्वाचित।।

आगे चलकर लौकिक साहित्य में सहिष्णुता की षिक्षा हमें कदम कदम पर देखने को मिलती है। जैसा कि महाकवि कालिदास ने षाकुन्तलम के चतुर्थ अंक में षकुन्तला से कहा है

षुश्रुषस्व गुरून् कुरू प्रिय सखी वृतिं सपत्नी जने

भर्तुर्विप्रकृताअपि रोषणतया मास्म प्रतीपं गमय।

भूयिष्ठं भव दक्षिणां परिजने भागयेष्वनुत्सेकिनी

यान्त्येवं गृहिणी पदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः।।

सम्पूर्ण संस्कृत जगत की चर्चा न करते हुए संक्षेप मे कहना चाहूंगी कि भर्तृहरि कृत नीति षतक तथा बाणभट्ट कृत कादम्बरी का अंष षुकनासोपदेष आदि कुछ ऐसे अमृत कण है जो न केवल विद्यार्थियों को वरन् मानव मात्र को हृदयंगम करवाने चाहिए क्योंकि आज एक जो बहुत बड़ी चुनौती हमारे सामने आ रही है वह है सहिष्णुता की कमी जिससे कि विकराल समस्याएँ खड़ी हो रही है और सहिष्णुता बढ़ाने मे काफी हाथ है। हमारे संस्कृत ज्ञान रूपी महासागर का। मानव मात्र के सहिष्णु होने पर ही राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय षान्ति सद्भाव एवं विकास द्रुत गति पकड़ पायेगा।

आज विष्व पर दृष्टि डालते है तो हृदय काँप उठता है। आतंकवाद की घटनाओं से बेचैनी हो उठती है जैव हमलों से और विमान अपहरण आदि असंख्य काण्ड अनगिनत दुख उत्पन्न कर देते है।

क्या है आतंकवाद आदि घटनाओं के पीछे ठोस वजह सहिष्णुता की कमी, कुण्ठित अहम भाव तथा साहित्य ज्ञान का अभाव।

मेरा प्रयास है कि निम्नांकित बिन्दुओं पर विस्तुत परिचर्चा कर समाज में मानसिक वैमनस्य एवं आपसी खींचतान को कम किया जाये। अपने अपने चरित्र की रक्षा करते हुए एक दूसरे को सम्मान देवे। जरूरत है

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सहिष्णुता की, राष्ट्रीय स्तर पर सहिष्णुता की, प्रान्तीय स्तर पर सहिष्णुता की, क्षेत्रीय स्तर पर सहिष्णुता की, जातीय स्तर पर सहिष्णुता की, भाषायी स्तर पर सहिष्णुता की, षैक्षणिक स्तर पर सहिष्णुता की, पारिवारिक स्तर पर सहिष्णुता की, व्यक्तिगत जीवन में सहिष्णुता इत्यादि क्षेत्रों मे सहिष्णुता को बढ़ावा किस प्रकार मिले ताकि विकास की निर्वाध गति चलती रहे।

ऊँ सहनावतु सह नौ युनक्तु

सहवीर्यं करवाव है तेजस्वी नावधीतमस्तु।।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. ऋग्वेद दषम मण्डल।
2. अभिज्ञान षाकुन्तलम् चतुर्थ अंक।
3. दूरदर्षन व समाचार पत्रों से प्रसारित आतंकी घटनाये।